महालक्ष्मी आरती (हिन्दी)

!! जय देवी जय देवी जय महालक्ष्मी,
रहती हो स्थूलों में सूक्ष्मरूप लीन्ही,
करविरपुरवासिनी, सुरवरमुनिमाता,
पुरहर वरदायि तू मुरहर प्रियकान्ता !!

!! धाता को जन्म दिया हरिनी नाभि में,
शेष नहीं सक्षम वर्णन करने में,
मातुलिंग गदा खेटक रविकिरणीं,
झलझल सुवर्ण – वाती पियुषसरपानी !!

!! माणिकरसना, सुरंगवसना, मृगनयनी,
शशिकरवदना, राजस मदन की जननी,
ताराशक्ति अगम्या शिवभजकां गौरी ,
सांख्य बोलते प्रकृती निर्गुण अविकारी !!

!! निगमागम का सार निजबीज गायत्री,
निज धर्माचरण से प्रकटे पद्मवतीं,
सरिता तू अमृता तू अध को निवारी,
दुर्घट असुर निहन्त्री भवभव निस्तारी !!

!! प्रणत जनों कि माया दूर करो माता,
तव चिन्मय रूप भी देखते ही बनाया,
कर्मोंकी मम रेखा दूषित जो होगी,
विरंचिकृत, जो विधान मैं हूं दुर्भागी !!

!! मिटा दीजिये सबको नयी लिखें रेखा,
चरण धूलिसे निर्मल करो भाग्यरेखा !!

Pandit.com